www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शुक्रवार 1 मार्च 2019

दैनिक जागरण

कार्य की योजना बनाएं और योजना के अनुरूप कार्य करें

बहानेबाज पाकिस्तान

यह राहत भरी खबर है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने यह घोषणा कर दी कि भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान को रिहा कर दिया जाएगा। पाकिस्तानी संसद में इस आशय की घोषणा करते हुए उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वह ऐसा शांति की पहल के तौर पर करेंगे। यह सही है कि पाकिस्तान जेनेवा संधि का पालन कर रहा है, लेकिन यह मानने का तो सवाल ही नहीं उठता कि वह शांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखा रहा है। अगर पाकिस्तान शांति के प्रति तनिक भी समर्पित होता तो वह जैश ए मुहम्मद जैसे आतंकी संगठन को संरक्षण देने के साथ ही ऐसा न करने का बहाना नहीं बना रहा होता। यदि इमरान खान और उनका नया पाकिस्तान शांति का सचमुच पक्षधर है तो उसे जैश सरगना मौलाना मसूद अजहर को उसके सुरक्षित ठिकाने से निकालकर भारत के हवाले करना चाहिए। उसे जैश और लश्कर सरीखे आतंकी संगठनों पर पाबंदी लगाने का स्वांग करना भी छोड़ना चाहिए। वह एक अर्से से न केवल यही कर रहा है, बल्कि दुनिया से छल भी कर रहा है। इसी कारण अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों को बार-बार यह कहना पड़ रहा कि वह अपने यहां के आतंकी ढांचे को नष्ट करे और फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स उसे ग्रे सूची से बाहर नहीं कर रहा।

हैरत नहीं कि अभिनंदन को रिहा करने के फैसले के पीछे पाकिस्तान का मूल मकसद दुनिया को अपना नकली चेहरा दिखाना और अंतरराष्ट्रीय दबाव से मुक्त होना हो। एक अन्य मकसद भारत के आक्रामक तेवरों से पिंड छुड़ाना भी हो सकता है। सच्चाई जो भी हो, भारत को उसके इस नए झांसे में बिल्कुल नहीं आना चाहिए कि वह शांति का संदेश देने के लिए भारतीय पायलट को छोड़ने जा रहा है। अभिनदंन की वापसी की प्रतीक्षा के साथ हम भारतीयों को इसका भी भान होना चाहिए कि उन्होंने पुराने माने जाने वाले युद्धक विमान मिग-21 के जरिये कहीं अधिक उन्नत किस्म के पाकिस्तानी लड़ाकू विमान एफ-16 को ध्वस्त करने का जो शौर्य दिखाया वह भारतीय वायुसेना और उसके पायलटों के युद्ध कौशल का एक ऐसा अप्रतिम प्रमाण है जिसे पाकिस्तान आसानी से नहीं भूल सकता। भारत को ऐसे जतन जारी रखने चाहिए जिससे पाकिस्तान इस भारतीय योद्धा के पराक्रम के साथ यह भी न भूल सके कि अगर उसने अपने आतंकियों के सहारे उसे तंग करने का सिलसिला कायम रखा तो बालाकोट दोहराया जा सकता है। पाकिस्तान जब तक सुधरता नहीं तब तक उसे दंडित करने का कोई मौका छोड़ना नहीं चाहिए। निःसंदेह वह भारत की आक्रामकता से सहमा है, लेकिन अभी ऐसे कोई संकेत नहीं कि वह सुधरने के लिए तैयार है। अच्छा हो कि इस बात को हमारे वे राजनीतिक दल भी समझें जो राजनीतिक कारणों से ऐसे कठिन समय में भी एकजुटता का परिचय देने में हीलाहवाली कर रहे हैं। अगर इस समय भी दुनिया को राजनीतिक तौर पर एकजुट होने का संदेश नहीं दिया जाएगा तो कब दिया जाएगा? यह वह समय है जब राजनीतिक लाभ-हानि से अधिक महत्ता देश के मान-सम्मान को दी जानी चाहिए। अफसोस कि यह सामान्य सी बात रेखांकित करने की जरूरत पड़ रही है।

वन भूमि हस्तांतरण

उत्तराखंड में जून 2013 में आई प्राकृतिक आपदा के बाद सड़क समेत अन्य योजनाओं और परियोजनाओं के लिए वन भूमि हस्तांतरण के संबंध में राज्य को मिले अधिकार की मियाद खत्म होने के बाद इसकी दोबारा बहाली न होने से सरकार की चिंता बढ़ गई है। हालांकि राज्य सरकार की ओर से इस विषय को पूरी गंभीरता के साथ केंद्र सरकार के समक्ष उठाया जा रहा है, मगर अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया है। ऐसे में 71 फीसद वन भूभाग वाले उत्तराखंड में तमाम योजनाओं के लिए वन भूमि की उपलब्धता सुनिश्चित कराने में दिक्कतें पेश आ रही हैं। थोड़ा पीछे मुड़कर देखें तो जून 2013 की आपदा में हुई भारी क्षति को देखते हुए केंद्र सरकार ने फरवरी 2014 में राज्य को वन भूमि पर प्रस्तावित योजनाओं के निर्माण के लिए एक हेक्टेयर तक वन भूमि हस्तांतरण के लिए अधिकृत किया था। इसके बाद केंद्र ने वर्ष 2015 में आपदा प्रभावित जिलों में पांच हेक्टेयर तक वन भूमि हस्तांतरण की स्वीकृति का अधिकार भी एक साल के लिए राज्य को दिया। जाहिर है कि इससे उत्तराखंड का काफी फायदा मिला और तमाम योजनाओं के लिए भूमि संबंधी दिक्कतों का निस्तारण हुआ। इस बीच 31 दिसंबर 2018 को एक हेक्टेयर क्षेत्र तक के अधिकार की अवधि भी खत्म हो गई। राज्य को उम्मीद थी कि केंद्र सरकार इस अधिकार को जल्द ही बहाल कर देगी, मगर अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। हालांकि मुख्यमंत्री और वन मंत्री की ओर से इस बारे में केंद्र में लगातार दस्तक दी जा रही है। राज्य सरकार का तर्क है कि विषम भूगोल और तमाम जटिलताओं के बावजूद उत्तराखंड पर्यावरण संरक्षण में अहम योगदान दे रहा है। सालाना करीब तीन लाख करोड़ रुपये की पर्यावरणीय सेवाएं इसकी बानगी हैं। यही नहीं, वन कानूनों एवं वन्यजीवों के कारण अलग से दुश्वारियां भी झेलनी पड़ रही हैं। सरकार का कहना है कि वन भूमि हस्तांतरण का अधिकार न होने से राज्य के विकास कार्यों पर असर पड़ रहा है। ऐसे में जरूरी है कि इस अधिकार की जल्द बहाली की जाए, क्योंकि सवाल राज्य के विकास से जुड़ा है।

पुरानी धारणाएं तोड़ते मोदी

प्रदीप सिंह

उड़ी का बदला दस दिन में और पुलवामा का बारह दिन में, यह नया भारत है। इससे मोदी ने वह मिथक भी तोड़ा है कि परमाणु हथियार संपन्न पाकिस्तान पर सैन्य कार्रवाई संभव नहीं

रामचरित मानस में एक प्रसंग है। समुद्र पार करने के लिए भगवान राम समुद्र से विनय करते हैं, पर वह उनकी विनती सुनने को तैयार नहीं हुआ। गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं-'विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति, बोले राम सकोप तब भय बिन होइ न प्रीति।' पाकिस्तान ने आतंकवाद से बाज आने की भारत की विनती को स्वीकार नहीं किया तो 26 फरवरी को तड़के भारत ने बता दिया कि हमारी विनम्रता कमजोरी नहीं है। वायुसेना के 12 मिराज-2000 लड़ाकू विमान पुलवामा हमले के 12 दिन बाद तथा हमारे शहीदों की तेरहवीं से पहले अजहर मसूद और पाक सेना के आतंकियों की अंत्येष्टि करके आ गए। वायुसेना के गोलों की गूंज और आग की तपिश पूरी दुनिया ने महसूस की। पहली बार दुनिया भर के देशों ने कहा कि भारत ने ठीक किया।

जो बीती छब्बीस फरवरी को हुआ वह पिछले अड़तालीस साल में नहीं हुआ था। पूरा देश पिछले तीस साल से इस दिन का इंतजार कर रहा था। लोग थक गए थे, शहीदों के ताबूत गिनते-गिनते। सवा सौ करोड़ का देश स्वयं को असहाय महसूस कर रहा था। लगता था कि यही हमारा प्रारब्ध बन गया है। हमारे जवान शहीद होते रहेंगे और नेता उस हमले की निंदा फिर और कड़ी निंदा करते रहेंगे। सत्ता में कोई दल हो, कोई नेता हो वह जवाब देने की बात करते रहेंगे, पर स्थिति वही ढाक के तीन पात वाली रहेगी। लोगों के मन में हताशा और आक्रोश का भाव स्थायी हो गया था। साल 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक के बाद थोड़ी उम्मीद जगी थी कि भारत बदल रहा है, परंतु पुलवामा ने लोगों को फिर से पुरानी मनःस्थिति में पहुंचा दिया। ऐसे में लोग चाहते क्या थे? सिर्फ इतना कि देश के हुक्मरान हमारी फौज के हाथ खोल दें और मातम दुश्मन के घर में मनाया जाए, भारत में नहीं।

पुलवामा हमले के बाद जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पाकिस्तान ने बहुत बड़ी गलती कर दी है और उसे इसका भारी नुकसान उठाना पड़ेगा तो बहुत से लोगों को लगा था कि इतिहास दोहराया जा रहा है। आखिर अटल बिहारी वाजपेयी ने भी आर-पार की लड़ाई की बात कही थी। मनमोहन सिंह ने भी करारे जवाब की बात कही थी। पर नहीं, अब और नहीं। छब्बीस फरवरी भारत के इतिहास का ऐतिहासिक दिन बन गया। संसद पर हमले के बाद जो वाजपेयी नहीं कर पाए, मुंबई हमले के बाद जो मनमोहन सिंह नहीं कर पाए वह नरेंद्र मोदी ने कर दिखाया। भारतीय वायुसेना की कार्रवाई के बाद विपक्ष और बुद्धिजीवियों के एक वर्ग ने प्रतिक्रिया देते समय इस बात का खास ध्यान रखा कि कहीं मोदी की तारीफ न हो जाए। इन लोगों ने दिल खोलकर वायुसेना की प्रशंसा की, जो निश्चित रूप से होनी भी चाहिए। भारतीय वायुसेना ने अपनी जांबाजी और रणकौशल का लोहा एक बार फिर पूरी दुनिया से मनवा लिया। ऐसे दुर्गम स्थान पर हमला करके लौट आए और दुश्मन हाथ मलता रह गया। पर हे विद्वतजनों और विघ्नसंतोषियों हमारी वायुसेना, थल सेना और नौसेना पहले भी इतनी ही ताकतवर और जांबाज थीं। पर उनके हाथ बंधे हुए थे। दिसंबर 2001 में संसद पर हमले के बाद सेना सीमा पर पहुंच गई और करीब डेढ़ महीने बाद वापस आ गई। मुंबई हमले के बाद वायुसेना के लड़ाकू विमान हमले के लिए तैयार थे। पायलट कॉकपिट में बैठे थे, लेकिन दिल्ली से आदेश नहीं आया।

पुलवामा के बाद जब मोदी ने कहा कि फौज के हाथ खोल दिए हैं तो बहुत से लोगों ने मजाक उड़ाया कि क्या अभी तक बांधे हुए थे। उड़ी का बदला दस दिन में और पुलवामा का बारह दिन में, यह नया भारत है। यह मुमकिन हुआ है, क्योंकि मोदी हैं। भारत में कितने ही आतंकवादी हमले हों, पर भारतीय सेना नियंत्रण रेखा पार नहीं करेगी इस मिथक को मोदी ने तोड़ दिया। मोदी ने इस मिथक को भी तोड़ दिया कि परमाणु हथियार संपन्न पाकिस्तान से तनाव बढ़ाना या उस पर कोई सैन्य कार्रवाई करना संभव नहीं है। मोदी ने पाकिस्तान ही नहीं पूरी दुनिया को बता दिया कि आतंकी हमला होगा तो भारत की फौजें एक बार नहीं, बल्कि बार-बार नियंत्रण रेखा पार कर सबक सिखाने से गुरेज नहीं करेंगी।

भारत का यह आत्मबल केवल बेहतर फौज, फौजियों और हथियारों के कारण ही नहीं है। यह आत्मबल मोदी सरकार की पिछले साढ़े चार साल की विदेश नीति के कारण भी है। भारत चीन और सऊदी अरब को छोड़कर दुनिया के अधिकांश देशों को यह समझाने में कामयाब रहा है कि पाकिस्तान में चल रही आतंक की फैक्ट्री पूरी दुनिया के लिए खतरा है। यह भी कि उसे आतंकवादी हमलों का जवाब देने का हक है। यही कारण है कि भारत ने केवल पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में ही नहीं पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में जैश-ए-मुहम्मद के सबसे बड़े आतंकी शिविर को जमींदोज कर दिया। जैश-ए-मुहम्मद भारत के खिलाफ पाक सेना का बड़ा हथियार है। पिछले तीस वर्षों में पहली बार पाकिस्तान के पाले-पोसे आतंकी संगठनों और उनके जरिये पाकिस्तानी सेना को इतना बड़ा नुकसान हुआ है। भारत के आत्मबल का तीसरा और आज की परिस्थिति में सबसे बड़ा कारण है, मोदी के रूप में एक ऐसे प्रधानमंत्री का होना जिसके पास कड़े फैसले लेने की राजनीतिक इच्छाशक्ति है। जो देशहित में जोखिम लेने को तैयार है। मोदी ने तय किया कि सुविधाजनक तटस्थता का समय चला गया है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के दौरान राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की एक कविता क्रांतिगीत बन गई थी। उसकी एक पंक्ति है- 'दो राय, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो।' जन आक्रोश का घर्घर नाद पूरे देश में गूंज रहा था। मोदी ने उस नाद को सुना, समझा और देश की भावनाओं का सम्मान किया। दिनकर के ही शब्दों में 'वीरता नहीं तो सभी विनय क्रंदन है।' मंगलवार की हवाई कार्रवाई में भारत ने इस बात का ध्यान रखा कि पाकिस्तान के किसी सैनिक ठिकाने या आम लोगों को निशाना न बनाया जाए। तीनों जगहों आतंकवादी शिविरों पर ही हमला किया गया। इससे पाकिस्तान के पास दुनिया के सामने रोने का मौका भी नहीं रहा।

प्रधानमंत्री मोदी ने केवल पाकिस्तान को ही नहीं देश में अपने विरोधियों को भी मुश्किल में डाल दिया है। न पाकिस्तान के पास कोई विकल्प है और न ही उनके पास। पुलवामा हमले के बाद कुछ दिन चुप्पी साधने के उपरांत विरोधी दल मोदी के प्रति हमलावर हो गए थे। वायुसेना की कार्रवाई के बाद सब सन्नाटे में हैं। हालांकि उनके खैरख्वाह भूमिका तैयार कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर कहा जा रहा है कि मोदी को इसका राजीनितिक फायदा नहीं उठाना चाहिए। यह बात ऐसे लोग कह रहे हैं जो 1971 के बांग्लादेश युद्ध का आज भी राजनीतिक श्रेय लेते हैं। किसी काम का श्रेय किसी को लेने से नहीं मिलता। काम का श्रेय लोग देते हैं। मोदी ने जो किया है उसका श्रेय उन्हें इस देश की जनता देगी। इस कार्रवाई के बाद लोगों को मोदी की इस बात पर यकीन करना आसान होगा कि देश सुरक्षित हाथों में है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

सैन्य तैयारी की समीक्षा का सही समय

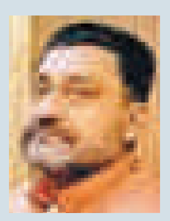

अवधेश कुमार

विंग कमांडर के साथ हुए हादसे में वायुसेना के अरसे से लंबित आधुनिकीकरण की अनदेखी को भी एक वजह माना जा रहा है

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने भारतीय वायु सेना के विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान को रिहा करने का एलान किया है। बुधवार को पाकिस्तानी वायुसेना के दुस्साहस का जवाब देते हुए अभिनंदन का मिग-21 विमान हादसे का शिकार हो गया था और वह नियंत्रण रेखा के पार पाकिस्तानी कब्जे वाले इलाके में पहुंच गए थे। इसके बाद दोनों देशों के बीच बढ़ा तनाव चरम पर पहुंच गया। अभिनंदन की रिहाई के एवज में पाकिस्तान ने भारत से सौदेबाजी की तमाम कोशिशें तो कीं, लेकिन भारत सख्त रवैये के साथ अपने इस बिगड़ैल पड़ोसी के दबाव में नहीं आया। आखिरकार इमरान खान को पाकिस्तान की संसद में अभिनंदन की रिहाई का एलान करना पड़ा। हालांकि इसे वह शांति की दिशा में कदम बढ़ाने वाली पहल के तौर पर प्रचारित कर रहे हैं, पर इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारत के दबाव की इसमें अहम भूमिका रही। अंतरराष्ट्रीय कानूनों के दायरे में भी पाकिस्तान के लिए अभिनंदन को रिहा करना अपरिहार्य तो था ही वहीं भारत के मौजूदा कड़े रुख को देखते ऐसा न करने पर उसको इसकी बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ सकती थी।

अभिनंदन की वापसी राष्ट्रीय आकांक्षा बन गई थी और उनके सकुशल स्वदेश लौटने के साथ इस प्रकरण का सुखद पटाक्षेप भी हो जाएगा। मगर इसके साथ ही कुछ प्रश्न हमारे सामने खड़े होते हैं कि अभिनंदन इस हादसे के शिकार क्यों बने? इसके लिए वायुसेना के अरसे से लंबित आधुनिकीकरण की अनदेखी को भी एक बड़ी वजह माना जा रहा है। राजनीतिक हितों के लिए कुछ दल राफेल जैसे विमानों की खरीद में अवरोध पैदा करते हैं। इसकी कीमत अभिनंदन जैसे बहादुर सैनिकों को चुकानी पड़ती है, क्योंकि वह वही मिग-21 विमान उड़ान रहे थे जो उड़ते हुए ताबूतों के रूप में कुख्यात हो गया है। यह तो उनकी काबिले तारीफ क्षमताओं का कमाल था कि उन्होंने उसी विमान से पाकिस्तान के बेहद सक्षम माने जाने वाले एफ-16 विमान को मार गिराया। अभिनंदन की आड़ में पाकिस्तान ने भारत के मनोबल पर प्रहार का प्रयास तो किया, लेकिन इसका उसे कड़ा प्रतिकार भी झेलना पड़ा। ऐसे में हमें यह समझना होगा कि आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़नी है तो हमें ऐसी घटनाओं और मानवीय सहित अन्य क्षति को झेलने एवं सहन करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होना होगा। इस बीच एक प्रश्न यह भी है कि क्या हम मानते हैं कि आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में सफलता हमें बिना कोई कीमत चुकाए मिल जाएगी? भारतीय वायुसेना पाकिस्तान को उसकी सीमा में जाकर सबक सिखा आए और वह चुपचाप बैठा रह जाएगा? पाकिस्तान को अपने अवाम को दिखाने के लिए कुछ कार्रवाई तो करनी ही थी। वह आगे भी ऐसा कर सकता है और जब करेगा तो भारत को भी करारा जवाब देना होगा। उनमें अभिनंदन जैसी दूसरी घटनाएं भी हो सकती हैं।

ऐसे में हमें यह विचार करना होगा कि दृढ़ संकल्प तथा हर संभावित क्षति को सहने एवं डटे रहने की सामूहिक मानसिकता वाला देश ही आतंकवाद को खत्म करने का लक्ष्य पा सकता है। पाकिस्तान में लोकतांत्रिक संस्थाएं अवश्य संकट में हैं, लेकिन वहां की सेना का रुतबा एवं उसकी ताकत बची हुई है। हर मोर्चे पर भारत से कमजोर होने के बावजूद पाकिस्तानी फौज अपनी हरकतों से बाज नहीं आती। जम्मू-कश्मीर में एफ 16 विमानों से सैनिक ठिकानों पर हमले का दुस्साहस भी कुछ ऐसा ही था। यह तो हमारे सुरक्षा बलों की सजगता और बहादुरी थी कि उन्होंने तुरंत उन्हें खदेड़ दिया, लेकिन यदि हमारे पास और उन्नत विमान होते तो दुश्मन को और कड़ा जवाब दिया जा सकता था और हमें क्षति भी नहीं उठानी पड़ती। ऐसे में यह सुरक्षा बलों के आधुनिकीकरण पर चर्चा का भी उपयुक्त समय है। मिग विमानों पर काफी समय से सवाल उठ रहे हैं। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड उनके उन्नयन का अपेक्षित काम कर नहीं पा रही है। फिर भी हमारे सैनिक उनसे काम चला रहे हैं। कल्पना कीजिए कि हमारे बेड़े में राफेल जैसे विमान जुड़ जाएं तो दुश्मन की क्या दशा होगी? अभी तक की अपनी कार्रवाई से भारत ने यही संदेश दिया है कि वह सीमापार आतंकवाद पर प्रहार करने में सक्षम है। पाकिस्तान को सुबूत सौंप उसकी कार्रवाई के इंतजार में भारत अब मूकदर्शक नहीं बना रहेगा। भारत की इस स्पष्ट रणनीति से पाकिस्तान को समझ लेना चाहिए कि अगर भविष्य में वह कोई धृष्टता करेगा तो भारत कड़ाई से उसका जवाब देगा। भारत का यह दृष्टिकोण बड़ा बदलाव है। साफ है कि कोई भी परिवर्तन बिना किसी बलिदान के अंतिम लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता। हालांकि पाकिस्तान की कार्रवाई को युद्ध भी माना जा सकता है। भारत ने केवल आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया और पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों या आम नागरिकों को नहीं। इसके उलट पाकिस्तान की कार्रवाई का लक्ष्य भारतीय सैन्य ठिकाने थे। यह बात अलग है कि वे सफल नहीं रहे। कूटनीतिक स्तर पर भी विदेश मंत्रालय ने भारत में पाकिस्तान के कार्यवाहक उच्चायुक्त सैयद हैदर शाह को तलब कर बिना उकसावे के भारतीय वायु सीमा का अतिक्रमण करने पर आपत्ति पत्र सौंप दिया है। इसमें लिखा है कि भारत ऐसे आक्रमण या सीमापार आतंकवाद से अपनी सुरक्षा, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने का अधिकार रखता है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उसकी धरती से संचालित आतंकवादी शिविरों के खिलाफ कार्रवाई पर पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय दायित्व और द्विपक्षीय प्रतिबद्धता दिखाने के बजाय भारत के खिलाफ आक्रामक तेवर दिखा रहा है।

इस तरह भारत ने मान्य तरीके के अनुरूप पहला कदम उठाया है। इसके बाद पाकिस्तान कोई हरकत करेगा तो फिर सीधे जवाब का विकल्प सुरक्षित है। प्रधानमंत्री ने स्वयं तीनों सेना प्रमुखों के साथ बैठक कर उन्हें खुली छूट की दोबारा घोषणा कर दी है। ऐसे में हमें राजनीतिक नेतृत्व के साहसिक निर्णय और सेना की रणनीति एवं शौर्य पर भरोसा करना चाहिए। फिर भी अगर हम छोटी-मोटी क्षति, किसी कदम के तत्काल प्रतिकूल परिणाम आने, शीघ्र सफलता न मिलने या कुछ समय के लिए प्रतिद्वंद्वी का पलड़ा भारी होने से विचलित होने लगेंगे तो इस लंबी लड़ाई में जीत नहीं पाएंगे। अंतरराष्ट्रीय नियमों और मर्यादाओं का पालन करने वाले देश के नाते भारत की हर कार्रवाई और हर कदम के साथ कुछ सीमाएं रहेंगी, जबकि आतंकवाद पर हमारे आरोप को न स्वीकार करने वाला पाकिस्तान किसी भी सीमा तक जा सकता है। आखिर इमरान ने सेंट्रल कमान की बैठक क्यों बुलाई जिसमें नाभिकीय कमान ढांचा भी शामिल है? यह इमरान के शांति प्रस्ताव के विपरीत है।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

प्रेम की भाषा

आजकल अभिभावकों की शिकायत है कि उनका बच्चा कहना नहीं मानता और उनसे बहस करता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि माता-पिता बच्चे को प्रेम की वह भाषा प्रदान ही नहीं करते, जो वह चाहता है। प्रेम की भाषा में पारंगत न होने के कारण ही वे अपने बच्चे तक अपने प्रेम को पूरी तरह पहुंचाने में असफल रहते हैं। आखिर क्या है प्रेम की भाषा? प्रेम की मुख्य भाषा है सकारात्मक शब्द और इसकी सहयोगी भाषाएं हैं-प्रशंसा, सहयोग और समय। यदि आपको प्रेम की भाषा का विद्वान बनना है तो अभी से अपने जीवन से भयंकर, बेकार, नहीं हो सकता, कभी नहीं जैसे नकारात्मक शब्दों को हमेशा के लिए निकाल दीजिए। जब माता-पिता अपने बच्चों को नकारात्मक भरे शब्द बोलते हैं कि 'तुम कभी नहीं कर पाओगे', 'तुमसे कभी कुछ नहीं होता', 'तुम तो ही ही नालायक' तो ये शब्द बच्चे के मनोमस्तिष्क में जाकर कैद हो जाते हैं और वह चिढ़कर अपने माता-पिता को वही लौटाने की कोशिश करता है। प्रसिद्ध कवि एडविन मार्कहम का कहना है कि हम दूसरों के जीवन में जो भी भेजते हैं, वही हमारे जीवन में लौटकर आता है। इसलिए सदैव सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करें। यह प्रेम की भाषा की वर्णमाला है। जब यह वर्णमाला आपको अच्छी तरह आ जाएगी तो फिर प्रशंसा, सहयोग और समय के वाक्य आप बेहतरीन बना पाएंगे और जीवन में मनचाही सफलता को अपने आंगन में पाएंगे।

जहां नकारात्मक शब्द मनुष्य को दुखी करते हैं, वहीं सकारात्मक शब्द व्यक्ति को ऊपर उठाने का प्रयास करते हैं। प्रेम की शब्दावली को मजबूत करने के लिए इसे आगे बढ़ाएं और सहयोग के लिए सदैव आगे आएं। रिश्तों में कटुता इसलिए आती है, क्योंकि लोग एक-दूसरे के साथ वस्तु की तरह व्यवहार करने लगते हैं। लोगों के साथ सदैव गरिमापूर्ण व्यवहार कीजिए। व्यक्तियों को नासमझी भरे व्यवहार पर भी समझदारी भरी प्रतिक्रिया देनी चाहिए। यह प्रेम को बढ़ाने का सर्वोत्तम तरीका है। प्रेम को चरम पर पहुंचाने के लिए समय अत्यंत अनिवार्य है। एक व्यक्ति अथवा संबंधी बेहद परेशानी और पीड़ा में है। ऐसे समय में यदि आप उसका हाथ थाम कर रखते हैं तो यकीन मानिए कि आपके प्रेम की डोर को कोई भी तोड़ नहीं सकता।

रेनू सैनी

एकजुट होने का वक्त

डॉ. गौरीशंकर राजहंस

सरकार को देश की नई पीढ़ी को जलियांवाला बाग नरसंहार के बारे में बताना चाहिए ताकि वह अंग्रेजों के अत्याचार के बारे में जान सके

13 अप्रैल, 1919 को जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर ने ब्रिटिश सेना की एक टुकड़ी के साथ अमृतसर के सैकड़ों निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। तब वे लोग अमृतसर के जलियांवाला बाग में राष्ट्रवादियों के भाषण सुन रहे थे। उस दौरान वहां 15 हजार से अधिक लोग मौजूद थे जिनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। उन पर दो हजार राउंड गोलियां चलाई गई थीं। उस बर्बर घटना के बाद जनरल डायर ने कोई अफसोस भी प्रकट नहीं किया और अपनी सेना को यह कहकर लौट जाने के लिए कहा कि चलो अपना काम पूरा हो गया। जनरल डायर ने मासूमों के उस नरसंहार को यह कहकर जायज ठहराया था कि 15 हजार लोग जो जलियांवाला बाग में जमा हुए थे, वे 1857 की तरह ही सैनिक विद्रोह की योजना बना रहे थे। और यदि उन्हें मौत के घाट नहीं उतारा जाता तो वे भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त कर देते, जबकि यह बात पूरी तरह झूठी थी।

तब पूरे देश में जलियांवाला बाग नरसंहार को लेकर रोष था और हर हिंदुस्तानी यही चाहता था कि उस नरसंहार का पूरी तरह बदला लिया जाए। हालांकि अंग्रेजों ने जलियांवाला बाग नरसंहार की घटना को छिपाने का भरसक प्रयास किया। उस समय के लंदन के समाचारपत्र भी उस घटना को बहुत महत्व नहीं दे रहे थे, परंतु भारतीयों का खून खोल रहा था। लिहाजा उधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल डायर का काम तमाम कर दिया था। उस घटना का असर भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर भी पड़ा। 1942 में जब गांधी जी ने अंग्रेजों से भारत छोड़ो का आह्वान किया तो पूरा देश गांधी जी के साथ खड़ा हो गया। गांधी जी हिंसा के खिलाफ थे। जलियांवाला बाग के नरसंहार की घटना ने उन्हें झकझोर कर रख दिया था।

अंग्रेज अब उस घटना को भुलाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि कुछ ऐसा नहीं किया जाए जिससे पता लगे कि सैकड़ों निर्दोष भारतीयों को अमृतसर में गोलियों से भून दिया गया था, परंतु आज जब संसार के अन्य देशों के शोधकर्ता खासकर अमेरिकी विश्वविद्यालयों के शोधकर्ता उसकी तह में जा रहे हैं, तब भारत सरकार को भी नई पीढ़ी को उस घटना के बारे में विस्तार से बताना चाहिए जिससे नई पीढ़ी के लोग यह जान सकें कि उनके पूर्वजों के साथ अंग्रेजों ने किस-किस तरह के अत्याचार किए थे। नई पीढ़ी के लोगों को यह भी बात समझ में आ जाएगी कि हमारे पूर्वजों ने बड़ी कठिनाई से आजादी हासिल की है। इसलिए आज जब सीमा पार से पाकिस्तान हम पर हर तरह के आतंकवादी हमले कर रहा है और हमारी आजादी को समाप्त करने का प्रयास कर रहा है तो हम आपस में छोटी-छोटी बातों में नहीं उलझें तथा एकजुट होकर पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दें।

देश एक नाजुक दौर से गुजर रहा है। ऐसे में सभी देशवासियों और राजनीतिक दलों को एकजुट होकर देश के भीतरी और बाहरी दुश्मनों का मुकाबला करना चाहिए। जलियांवाला बाग हमेशा देशवासियों को स्वतंत्रता संग्राम की जीती जागती कहानी बताता रहेगा।

(लेखक पूर्व सांसद एवं पूर्व राजदूत हैं)

मेलबाक्स

बदलते भारत की तस्वीर

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने अपने आलेख 'अब चुप होकर नहीं बैठेगा भारत' में साहस और शौर्य से परिपूर्ण जिस बदलते भारत की तस्वीर पेश की है, वह देश की वर्तमान राजनीतिक इच्छाशक्ति का प्रतिफलन है। यद्यपि इससे पहले भी भारत पाकिस्तान के सामने अपना पराक्रम प्रदर्शित कर चुका है, लेकिन इसके साथ उन कारणों की पड़ताल भी आवश्यक है, जिनकी वजह से पराजित पाकिस्तान पिछले तीन दशकों से आतंकवाद के जरिये भारत को अनवरत रूप से घायल कर रहा है। आखिर वह कौन-सी वजह थी जिसके कारण संसद और मुंबई के पाक पोषित आतंकी हमले के बाद भारत पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने में असमर्थ रहा। ठीक इसके विपरीत जब मोदी सरकार ने उड़ी आतंकी हमले के बाद सेना की सर्जिकल स्ट्राइक के जरिये अपने वीर जवानों की शहादत का बदला लिया तो देश-दुनिया ने भारत के इस बदलते रुख पर न केवल आश्चर्य व्यक्त किया, अपितु मोदी सरकार की सराहना भी की, लेकिन पाकिस्तान फिर भी नहीं चेता और भारत को पुलवामा जैसा भीषण आघात देने की गलती कर बैठा। इस आतंकी हमले से पूरे देश में पाकिस्तान के प्रति जो आक्रोश उमड़ा, वह अभूतपूर्व था। अपने देशवासियों के इस पीड़ाजनक आक्रोश को सक्षम मोदी सरकार ने जाया नहीं होने दिया और कुशल सैन्य रणनीति के साथ एयर स्ट्राइक कर पाकिस्तान के तीन आतंकवादी प्रशिक्षण कैंपों को तबाह कर दिया। चूंकि भारत का यह हमला नापाक आतंकवाद पर था, इसलिए इसे उचित ठहराया गया। यह मोदी सरकार की कूटनीतिक सफलता ही है कि पाकिस्तान का सहयोगी रहा अमेरिका भी आज भारत के पक्ष में खड़ा होकर पाकिस्तान को चेतावनी दे रहा है और पाकिस्तान का मित्र देश चीन भी आतंकवाद के विरुद्ध की जाने वाली भारत की इस सैन्य कार्रवाई पर चुप्पी साधे हुए है। बावजूद इसके आतंकवाद पर किए गए इस प्रहार को लेकर भारत के विपक्षी दलों द्वारा जैसी विकृत राजनीति की जा रही है, वह देशहित में नहीं है।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

जड़ से खत्म हो आतंकवाद

अमित शाह ने अपने आलेख 'अब चुप होकर नहीं बैठेगा भारत' के माध्यम से देश के विकास में अड़चन बन रहे आतंकवाद रूपी अराजकता को जड़ से खत्म करने का वादा किया है। 26 फरवरी का दिन सभी देशवासियों के लिए बेहद खास और खुशियों भरा रहा, क्योंकि इस दिन हमारे वायुसेना के जवानों ने पाकिस्तान में घुसकर वहां पनाह ले रहे कई आतंकियों को मौत के घाट उतारकर उसकी ईंट से ईंट बजा दी और इस प्रकार पुलवामा में हुए घातक आतंकी हमले का बदला लेकर हमारे शहीद जवानों को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की। पाकिस्तान को सबक सिखाना बेहद जरूरी था, क्योंकि उसने पुलवामा में आतंकी हमला करके भारत को क्षति पहुंचाई और अपनी गलती को स्वीकार तक न करने की गुस्ताखी की, जिसके उपरांत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को हमला करने की छूट दे दी, जो बहुत ही सराहनीय फैसला था। गौरतलब है कि भारत ने जिस अनोखे अंदाज में पाक पर हमला करके उसे ध्वस्त किया है, उसकी पाकिस्तान ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। यह सर्वविदित है कि पाकिस्तान हमेशा छिपकर और धोखे से हमला करता रहा है, परंतु हमारे भारतीय जांबाजों ने परोक्ष रूप से और पाकिस्तान में घुसकर आतंकियों को तहस-नहस कर दिया, जिससे यह प्रमाणित होता है कि भारत विश्व के ताकतवर देशों में से एक है। हमारी सेना इतनी सशक्त है कि यदि विश्व का कोई भी देश भारत को क्षति पहुंचाने की कोशिश करेगा तो उसे मुंहतोड़ जवाब मिलेगा। पाकिस्तान को अब संभल जाना चाहिए और आतंकवाद को जड़ से खत्म करने की ओर अग्रसर होकर परिपक्वता का प्रमाण देना चाहिए।

सौरभ पाठक, ग्रेटर नोएडा

हिंदू धर्म में सुधार

आर्य समाज के लिए आत्ममंथन का पड़ाव शीर्षक से लिखे अपने आलेख में विनोद बंसल ने आर्य समाज के विस्तार के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना खासतौर पर हिंदू धर्म में सुधार के लिए भी की थी, पर अफसोस कि हिंदू धर्म में अभी भी जातपात, छुआछूत, अंधविश्वास और कुछ आडंबर व्यापत हैं। हिंदू समाज को मजबूत करने के लिए इसकी सभी जातियों को एकजुट होना पड़ेगा। भारतीय जैसे-जैसे अपनी संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं से दूर होते जा रहे है, वैसे-वैसे देश में अनैतिक काम बढ़ते जा रहे हैं और परिवार टूट रहे हैं।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 ... न हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय ... ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।